निर्मित विदेश नीति राष्ट्रीय नीति बन गई जिस पर सभी राजनीतिक दल सहमत थे। उनके शांति, उपनिवेशवाद का विरोध तथा गुटनिरपेक्षता के मूल सिद्धान्तों को जनता की तरफ से पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। आगे चलकर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत की विश्व पटल पर अलग पहचान कायम की। उनके परमाणु कार्यक्रम की समस्त भारतवर्ष में प्रसंशा की गई और वह जनता के दिल की धड़कन बन गई, लेकिन आपातकाल में उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो गई। उसके बाद भारत की विदेश नीति पर लाल बहादुर शास्त्री, राजीव गांधी व इन्द्रकुमार गुजराल का भी कुछ प्रभाव रहा। इस प्रकार गुजराल के 'गुजराल सिद्धान्त' की सर्वत्र प्रसंशा की गई। इसके बाद भारत की विदेश नीति पर अटल बिहारी वाजपेयी जी का प्रभाव नेहरु से किसी भी द ष्टि से कम नहीं आंका जाना चाहिएं वाजपेयी ने 1998 में तीन परमाणु विस्फोट करके भारत को एक महान परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बना दिया। यद्यपि भारत के पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों को सुधारने के लिए वाजपेयी जी के प्रयास काफी सफल नही रहे, लेकिन शान्तिपूर्ण प्रयासों के द ष्टिकोण से वे काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। अब हाल ही में 22 मई, 2004 को भारत के प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह जी बने हैं जिनके आकर्षक व्यक्तित्व का प्रभाव भी भारत की विदेश नीति पर पड़ने की पूरी सम्भावना है।

(6) **आन्तरिक या घरेलु राजनीति** (Internal Politics) :- किसी भी देश की घरेलु राजनीति व विदेश नीति में गहरा सम्बन्ध होता है। मीब्रेल ने कहा है-"विदेश नीति दूसरे माध्यमों से घरेलु नीतियों का ही विस्तार है।" नेहरु जी की गुटनिरपेक्षता की सभी राजनीतिक दलों द्वारा प्रसंशा की गई है। भारत की विदेश नीति को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक-नौकरशाही, राजनीतिक दल, दबाव समूह व जनमत हैं। आज भारत की विदेश नीति का निर्माण एक स्वतन्त्र विदेश विभाग करता है जो सेना, नौकरशाही तथा राजनीतिक नेत त्व के साथ मिलकर ही कोई निर्णय लेता है। कई बार देश की आंतरिक परिस्थितियां विदेश नीति काफी शिथिल हो जाती है। राजनीतिक दलों की विचारधारा, ढांचा तथा उनकी आन्तरिक कमजोरियां विदेश नीति को भी उल्ट रूप प्रदान कर देती हैं। बहुदलीय प्रणाली की प्रकृति आम सहमति के बिना विदेश नीति के निर्माण में बाधक बन जाती है। यद्यपि वाजपेयी जी ने सांझा सरकार का संचालन करते हुए भी एक सुद ढ़ विदेश नीति का संचालन करते हुए भी एक सुद ढ़ विदेश नीति का संचालन किया। लेकिन ऐसा हमेशा सम्भव नहीं होता। इसी तरह व्यवसायिक दबाव समूहों की दबावकारी भूमिका भी आधुनिक समय में भारत की विदेश नीति को व्यापारिक हितों के अनुकूल चलने को बाध्य करती है। उदारीकरण के दौर ने तो दबाव समूहों की प्रभावकारी भूमिका को और अधिक सशक्त किया है। वर्तमान मनमोहन सरकार (2004) में विदेश नीति पर श्रमिक संघों का पूरा प्रभाव पड़ने की सम्भावना नजर आती है। आधुनिक युग में जनमत की उपेक्षा करना भी सरकार के लिए खतरे का सूचक है। किसी भी विदेश नीति के निर्धारण में जनमत का ध्यान रखना आवश्यक है। भारत की विदेश नीति के सन्दर्भ में राजनीतिक दलों व दबाव समूहों की प्रभावकारी भूमिका इस बात से आंकी जा सकती है कि जहां कुछ राजनीतिक दल अमेरिका के साथ सम्बन्धों को प्राथमिकता देते हैं तो कुछ सोवियत संघ के साथ। दक्षिणपंथी दलों व प्रगतिशील दबाव समूहों का झुकाव साम्यवाद की तरफ है। देश के मुस्लिम संगठन अरब देशों से सम्बन्ध कायम करने के पक्षधर हैं तो श्रमिक संगभ्न साम्यवादी देशों से। अतः किसी भी देश की विदेश नीति राजनीतिक व्यवस्था, दलगल राजनीति, सम्भ्रान्त वर्ग (Elite Class), दबाव समूहों आदि घरेलु तत्वों से भी प्रभावित होती है।

(7) **अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश** (International Milieu) :- किसी भी देश की विदेश नीति अपने चारों ओर विश्व में घट रही घटनाओं के प्रति उदासीन नहीं रह सकती। उसे हर हालत में प्रत्येक घटना का गहराई से अवलोकन करके उसे स्वयं के साथ सम्बन्धित करना पड़ता है। यही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की वास्तविकता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जिस अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का उदय हुआ उसें शीतयुद्ध कहा जाता है। इस तनाव को कम करने के लिए प्रयास करना भी सभी

देशों का प्राथमिक कर्तव्य बनता था। इसलिए विश्वशांति के आदर्श के अनुरूप संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए भारत ने गुटनिरपेक्षता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। भारत ने तीसरी दुनिया के नवोदित स्वतन्त्र देशों को एक मंच पर लाकर शीत युद्ध के तनाव पर अंकुश लगाने के प्रयास किए और गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेश नीति का महत्वपूर्ण सिद्धान्त बनाया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जन्मे संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों को भी भारत ने अपनी विदेश नीति में जगह दी। विश्व शान्ति का सिद्धान्त, नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अवधारणा, उपनिवेशवाद व रंगभेद की नीति का विरोध आज भी संयुक्त राष्ट्र सघ के महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं जो भारत की विदेश नीति में भी महत्वपूर्ण जगह बनाये हुए है। कोरिया संकट, स्वेज नहर संकट, कांगों विवाद, अरब-इजराइल संघर्ष आदि में भारत की गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति को परीक्षण स्थल प्रदान किया है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद आज भी गुटनिरपेक्षता नए अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में काम कर रही है। आज नई अन्तर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था का महत्वपूर्ण ध्येय आर्थिक मुद्दों को राजनीतिक मुद्दों पर वरीयता देना है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) की बढ़ती भूमिका का प्रभाव भी भारत की विदेश नीति पर पड़ रहा है। इसी तरह क्षेत्रीय संगठनों की राजनीति भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित करती है। आज भारत 'SAFTA' को महत्व देता है ताकि दक्षिण एशिया को मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाकर आपसी सम्बन्धों में मधुरता लाई जा सके और आर्थिक हितों को भी आसानी से प्राप्त किया जा सके। इसलिए भारत SAARC, ASEAN तथा 'हिन्द महासागर रिम' जैसे क्षेत्रीय संगठनों की राजनीति के अनुरूप अपनी विदेश नीति का निर्धारण करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति पर कुछ घरेलु तथा कुछ बाहरी तत्वों का प्रभाव पड़ता है। जहां घरेलु तत्वों के रूप में भूगोल, अर्थव्यवस्था, सैनिक तत्व, इतिहास, परम्पराएं, विचारधारा, व्यक्तित्व, राजनीतिक व्यवस्था, हित व दबाव समूहों, नौकरशाही, जनमत आदि ने इसे प्रभावित किया है, वहीं बाहरी तत्वों के रूप में क्षेत्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा बदलते विश्व परिवेश ने भी इसे काफी प्रभावित किया है। भारत की विदेश नीति जितनी अधिक घरेलु वातावरण से प्रभावित हुई है, उतनी ही अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश से भी हुई है। सत्य तो यह है कि भारत ने घरेलु राजनीतिक प्रतिक्रिया के साथ-साथ विश्व समुदाय की राजनीति प्रतिक्रिया के अनुरूप ही अपनी विदेश नीति को बनाया है। इसी कारण आज भारत की विदेश नीति सभी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की है जो संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्शों का पूरा सम्मान करती है।